नव भारत, भोपाल
23 SEP 2011

ग्रामीण पर्यटन

आगामी एक अक्टूबर से मध्यप्रदेश में पर्यटन को ग्रामीण कलेवर में भी लाया जा रहा है. राज्य में पर्यटन को पर्यावरणीय रूप देने के लिए 'ईको टूरिज्म बोर्ड' इस दिशा में प्रयासशील है. राज्य में 'जंगल सराय' योजना शुरू की जा रही है. प्रारंभ में राज्य में ऐसे 35 गेस्ट हाऊस सैलानियों के लिए खोले जा रहे हैं जहां वे जंगलों के बीच सुविधा के साथ रहकर राज्य के ग्रामीण परिवेश से भी परिचित होंगे. ईको टूरिज्म बोर्ड की वेबसाइट पर इनकी बुकिंग की जा सकेगी. ऐसे स्थान पिकनिक स्थल के रूप में आ सकते हैं. अभी भी बहुत से लोग आसपास के जंगलों में कुछ स्थानों पर पिकनिक के लिए जाते हैं. लेकिन उन्हें खाने पीने का पूरा सामान ढोना पड़ता है. जंगल सराय योजना से उन्हें काफी सहूलियत हो जायेगी.

राज्य के लिए यह गौरव की बात है कि यहां 6 टाइगर रिजर्व हैं. इनमें कान्हा-किसली तो प्रोजेक्ट टाइगर का योजना का सिरमौर है. गत टाइगर गणना में यह कहा गया कि राज्य में बाघों की संख्या में कमी आई है. इसका राज्य के वन मंत्री श्री सरताज सिंह ने ज़ोरदार प्रतिकार करते हुए फिर से टाइगर गणना की मांग कर डाली. केंद्र द्वारा इसे न मानने पर राज्य स्वयं फिर से यह गणना कर रहा है. बीच में यह खबर भी दुखद रही कि पन्ना टाईगर रिजर्व में राजस्थान सारिस्का अभ्यारण की तरह बाघ पूरी तौर पर खत्म हो चुके हैं. अब वहां फिर से बाघों को लाकर बसाया जा रहा है. राज्य का बांधवगढ़ पार्क भी बाघों के लिये काफी प्रसिद्ध है. यहां एक मादा बाघ को जाल में फंसाकर मार डाला गया था. राज्य में शिकारियों का धावा अभ्यारणों तक होता रहता है

राज्य शासन को इस बात के लिये आतुर है कि गुजरात के गिर बब्बर शेरों के लिए एक स्थान मध्यप्रदेश के मुरैना जिले में भी बनाया जाए. लेकिन गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेंद्र मोदी उसे केवल गुजरात की विशिष्ट पहचान के रूप में ही केवल गिर तक सीमित रखना चाहते हैं. बब्बर शेर आफ्रीका के कई देशों में भी बहुतायत से पाये जाते हैं. लेकिन सफेद शेर संसार मे केवल मध्यप्रदेश के रीवा अंचल में हीं था. राज्य ने उदारता के साथ उसे न सिर्फ देश के अन्य अभ्यारणों में पहुंचा दिया बल्कि विदेशों को भी भेंट स्वरूप देकर उन्हें दुनिया भर पहुंचा दिया.

जब अमेरिका राष्ट्रपति श्री आइजनहावर भारत की यात्रा पर आये थे तो प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ने उन्हें सफेद शेर भेंट किया था. लेकिन न जाने क्यों श्री नरेंद्र मोदी भारतीय जनता पार्टी के नेता होने के बाद भी भारतीय दृष्टिकोण से न सोचकर केवल गुजराती बने हुए हैं. अगर श्री मोदी अपना संकीर्ण दृष्टिकोण नहीं छोड़ते हैं तो मध्यप्रदेश को आफ्रीकी देशों से बब्बर शेर यहां ले आना चाहिए.